

कर चले हम फ़िदा

भावार्थ :

व्याख्या

कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियो

अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई

फिर भी बढ़ते क़दम को न रुकने दिया

कट गए सर हमारे तो कुछ ग़म नहीं

सर हिमालय का हमने न झुकने दिया

मरते-मरते रहा बाँकपन साथियो

अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

प्रस्तुत गीत कैफ़ी आजमी द्वारा भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर बनी फ़िल्म

‘हकीकत’ से लिया गया है। इस गीत में कवि ने खुद को भारत माता के सैनिक के रूप में अंकित किया है। कवि कहते हैं कि युद्धभूमि में सैनिक शहीद होते हुए अपने दूसरे साथियों से कहते हैं कि हमने अपने जान और तन को देश सेवा में समर्पित कर दिया, हम जा रहे हैं, अब देश की रक्षा करने का भार तुम्हारे हाथों में है। हमारी साँस थम रही थी, ठंड से नसें जम रही थीं, हम मृत्यु की गोद में जा रहे थे फिर भी हमने पीछे हटकर उन्हें आगे बढ़ने का मौका नहीं दिया। हमारे कटे सिरों यानी शहीद हुए जवानों का हमें ग़म नहीं है, हमारे लिये ये प्रसन्नता की बात है की हमने अपने जीते जी हिमालय का सिर झुकने नहीं दिया यानी दुश्मनों को देश में प्रवेश नहीं करने दिया। मरते दम तक हमारे अंदर बलिदान और संघर्ष का जोश बना रहा। हम बलिदानी देकर जाकर रहे हैं, अब देश की रक्षा करने का भार तुम्हारे हाथों में है।

ज़िंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर

जान देने के रुत रोज़ आती नहीं

हुस्न और इश्क दोनों को रुस्वा करे

वह जवानी जो खूँ में नहाती नहीं
आज धरती बनी है दुलहन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

कवि एक सैनिक के रूप में कहते हैं कि व्यक्ति को जिन्दा रहने के लिए बहुत समय मिलते हैं परन्तु देश के लिए जान देने के मौके कभी-कभी ही मिलते हैं। जो जवानी खून में सराबोर नहीं होती वही प्यार और सौंदर्य को बदनाम करती है। सैनिक अपने साथियों की सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि आज धरती दुल्हन बनी हुई है यानी हमारी आन, बान और शान का प्रतीक है, इसलिए इसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। हमारे जाने के बाद इसकी रक्षा की जिमेवारी अब आपके हाथों में है।

राह कुर्बानियों की न वीरान हो
तुम सजाते ही रहना नए काफ़िले
फतह का जश्न इस जश्न के बाद है
ज़िंदगी मौत से मिल रही है गले
बांध लो अपने सर से कफ़न साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

शहीद होते हुए सैनिक कहते हैं कि बलिदानों का जो सिलसिला चल पड़ा है वो कभी रुक ना पाये यानी अपने देश की दुश्मनों से रक्षा के लिए सैनिक हमेशा आगे बढ़ते रहे। इन कुर्बानियों के बाद ही हमें जश्न मनाने के अवसर मिलेंगे। आज हम मृत्यु को प्राप्त होने वाले हैं इसलिए हमें अपने सिर पर कफ़न बाँध लेना चाहिए यानी मृत्यु का चिंता ना करते हुए शत्रु से लोहा लेने के लिए तैयार रहना चाहिए। अब हमारे जाने के बाद देश की रक्षा की जिमेवारी तुम्हारी है।

खींच दो अपने खूँ से ज़मी पर लकीर
इस तरफ आने पाए न रावण कोई
तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे
छू न पाए सीता का दामन कोई

राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो

अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

सैनिक अपनी बलिदानी से पहले अपने साथियों से कहता है कि आओ हम अपने खून से धरती पर लकीर खींच दें जिसके पार जाने की कोई भी रावण रूपी शत्रु हिम्मत ना कर पाए। भारत माता को सीता समान बताते हुए कहता है अगर कोई भी हाथ भारत माता की आँचल छूने का दुस्साहस करे उसे तोड़ दो। भारत माता के सम्मान को किसी भी तरह ठेस ना पहुँचे। जिस तरह राम और लक्ष्मण ने सीता की रक्षा के लिए पापी रावण का नाश किया उसी तरह तुम भी शत्रु को पराजित कर भारत माता को सुरक्षित करो। अब ये वतन की जिमेवारी तुम्हारे हाथों में है।

कवि परिचय

कैफ़ी आज़मी

अतहर हुसैन रिज़वी का जन्म 19 जनवरी 1919 को आज़मगढ़ जिले में मजमां गाँव में हुआ। ये आगे चलकर कैफ़ी आज़मी के रूप में मशहूर हुए। कैफ़ी आज़मी की गणना प्रगतिशील उर्दू कवियों की पहली पंक्ति में की जाती है। इनकी कविताओं में एक ओर सामाजिक और राजनितिक जागरूकता का समावेश है तो दूसरी ओर हृदय कोमलता भी है। इन्होंने 10 मई 2002 को इस दुनिया को अलविदा कहा।

प्रमुख कार्य

कविता संग्रह – झंकार, आखिर-ए-शब, आवारा सज़दे, सरमाया

गीत संग्रह – मेरी आवाज़ सुनो

पुरस्कार – साहित्य अकादमी सहित अन्य पुरस्कार।

कठिन शब्दों के अर्थ

- फ़िदा – न्योछावर
- हवाले – सौंपना
- जानो-तन – जान और शरीर
- वतन – देश
- नब्ज़ – नाड़ी

- रुत – मौसम
- हुस्न – सौंदर्य
- इश्क – प्यार
- रुस्वा – बदनाम
- खुँ – खून
- वीरान – सुनसान
- काफिले – यात्रियों का समूह
- फतह – जीत
- जश्न – खुशी
- दामन – आँचल

प्रश्नोत्तरी :

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. क्या इस गीत की कोई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है?

उत्तर यह गीत सन् 1962 के भारत-चीन युद्ध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। चीन ने तिब्बत की ओर से आक्रमण किया और भारतीय वीरों ने इस आक्रमण का मुकाबला वीरता से किया।

2. 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया', इस पंक्ति में हिमालय किस बात का प्रतीक है?

उत्तर हिमालय भारत के मान सम्मान का प्रतीक है। भारतीय सैनिकों ने अपने प्राणों का बलिदान देकर भी देश के मान-सम्मान को सुरक्षित रखा।

3. इस गीत में धरती को दुल्हन क्यों कहा गया है?

उत्तर जिस तरह दुल्हन को लाल जोड़े में सजाया जाता है उसी तरह भारतीय सैनिकों ने अपने प्राणों की आहुति देकर धरती को खून के लाल रंग से सजा दिया इसीलिए इस गीत में धरती को दुल्हन कहा गया है।

4. गीत में ऐसी क्या खास बात होती है कि व जीवन भर याद रह जाते हैं?

उत्तर गीतों में भावनात्मकता, मार्मिकता, सच्चाई, गेयता, संगीतात्मकता, लयबद्धता आदि गुण होते हैं जिससे वे जीवन भर याद रह जाते हैं। कर चले हम फ़िदा' गीत में बलिदान की भावना स्पष्ट रूप से झलकती है जो हर हिन्दुस्तानी की दिमाग में रच-बस जाते हैं।

5. कवि ने 'साथियों' संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है?

उत्तर कवि ने 'साथियों' शब्द का प्रयोग सैनिक साथियों व देशवासियों के लिए किया है। सैनिकों का मानना है कि इस देश की रक्षा हेतु हम बलिदान की राह पर बढ़ रहे हैं। हमारे बाद यह राह सूनी न हो जाए। आने वाले भी देश की मान-सम्मान की रक्षा के लिए प्राणों का बलिदान देने को तैयार रहें।

6. कवि ने इस कविता में किस काफ़िले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है?

उत्तर कवि चाहता है कि यदि सैनिकों की टोली शहीद हो जाए, तो अन्य सैनिक युद्ध की राह पर बढ़ जाएँ। यहाँ देश की रक्षा करने वाले सैनिकों के समूह के लिए 'काफ़िले' शब्द का प्रयोग किया गया है।

7. इस गीत में 'सर पर क़फ़न बाँधना' किस ओर संकेत करता है?

उत्तर 'सर पर क़फ़न बाँधना' का अर्थ होता है मौत के लिए तैयार हो जाना। इस गीत यह शत्रुओं से रणभूमि में लड़ने की और संकेत करता है। सैनिक जब युद्धक्षेत्र में उतरते हैं तो वे देश की मान-सम्मान की रक्षा के लिए प्राण तक देने को तैयार रहते हैं।

8. इस कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए?

उत्तर प्रस्तुत कविता देश के सैनिकों की भाषा में लिखा गया है जो की उनके देशभक्ति की भावना को दर्शाता है। ये कभी अपने देश की मान-सम्मान की रक्षा के लिए पीछे नहीं हटेंगे चाहे इन्हें अपने प्राणों को ही अर्पित क्यों न करना पड़े। साथ ही इन्हें आने वाली पीढ़ियों से अपेक्षाएं हैं की वे भी उनके शहीद होने के बाद इस देश के दुश्मनों डट कर मुकाबला करें। वे कह रहे हैं कि उन्होंने अंतिम क्षण तक रक्षा की अब ये जिमेवारी आप पर है। देश पर जान देने के मौके बहुत कम आते हैं। ये क्रम टूटना नहीं चाहिए।

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिये।

1. साँस थमती गई, नब्ज जमती गई

फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया

उत्तर इन पंक्तियों में कवि कैफ़ी आज़मी ने भारतीय जवानों के साहस की सराहना की है। चीनी आक्रमण के समय भारतीय जवानों ने हिमालय की बर्फीली चोटियों पर लड़ाई लड़ी। इस बर्फीली ठंड में उनकी साँस घुटने लगी, साथ ही तापमान कम होने से नब्ज भी जमने लगी परन्तु वे किसी भी बात की परवाह किए बिना आगे बढ़ते रहे और हर मुश्किल का सामना किया।

2. खींच दो अपने खूँ से ज़मीं पर लकीर

इस तरफ़ आने पाए न रावन कोई

उत्तर यह गीत की प्रेरणा देने वाली पंक्तियाँ हैं। कवि का भाव है कि भारतभूमि सीता की तरह पवित्र है। शत्रु रूपी रावण हरण करने के लिए उसकी तरफ़ बढ़ रहा है इसलिए उनका आग्रह है की हम आगे बढ़कर उनकी रक्षा करें तथा ऐसी लक्ष्मण रेखा खींचें की शत्रु बढ़ न पाये यानी उसे रोकने का प्रयास करें।

3. छू न पाए सीता का दामन कोई

राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियों

उत्तर कवि सैनिकों को कहना चाहता है कि भारत का सम्मान सीता की पवित्रता के समान में है। देश की रक्षा करना तुम्हारा कर्तव्य है। देश की पवित्रता की रक्षा राम और लक्ष्मण की तरह करना है। अतः राम तथा लक्ष्मण का कर्तव्य भी हमें ही निभाना है।

भाषा अध्ययन

1. इस गीत में कुछ विशिष्ट प्रयोग हुए हैं। गीत संदर्भ में उनका आशय स्पष्ट करते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

कट गए सर, नब्ज जमती गई, जान देने की रुत, हाथ उठने लगे

उत्तर 1. युद्ध क्षेत्र में शत्रुओं के कट जाए सर।

2. डर के मारे सबकी नब्ज जम गई।
3. शत्रु के हमले की जानकारी मिलते ही सब जान गए कि यह जान देने की रूत है।
4. स्टेज पर मंत्री के आते ही जयकारे के साथ हाथ उठने लगे।

कविता का सार

‘कर चले हम फिदा’ गीत कैफ़ी आशमी द्वारा रचित है। यह गीत भारत-चीन के बीच हुए युद्ध की पृष्ठभूमि पर बनी फ़िल्म ‘हकीकत’ के लिए लिखा गया था। इस गीत में हिमालय क्षेत्रा में लड़े गए भारत-चीन युद्ध का अंकन किया गया है। सैनिक मरणासन्न होने तक अपने देश की रक्षा करता है। मरते समय वह अपने देश की रक्षा का भार अपने साथियों के कंधे पर छोड़कर चला जाता है। उसकी साँस थमने लगी और नब्ज भी ठंडी पड़ती गई अर्थात् वह मरणासन्न दशा में पहुँच गया, फिर भी उसके कदम नहीं रुके। वह स्वतंत्रता की बलिवेदी पर निरंतर आगे बढ़ता गया। सैनिकों ने अपने शीश स्वतंत्रता की बलिवेदी पर चढ़ा दिए। परंतु हिमालय पर्वत के शीश को उन्होंने झुकने नहीं दिया। मरते दम तक उनका बाँकपन कायम रहता है। उनके अनुसार जिंदा रहने के बहुत-से अवसर मिलते हैं, पर देश के लिए कुर्बानी करने के अवसर बार-बार नहीं मिलते। जवानी की सार्थकता इसमें है कि वह अपना खून देश के लिए कुर्बान कर दे। धरती माता दुल्हन के समान है। हमें उसकी माँग खून से भरनी है। सैनिक मरने से पहले कहता है कि यह कुर्बानी देने का क्रम निरंतर चलता रहेगा। तुम नित्यप्रति नए कापि फले सजाते रहो। इस कुर्बानी के बाद जीत का जश्न मनाने का अवसर मिलेगा। जिदगी मौत का वरण कर रही है। अब तुम अपने शीश पर कफ़न बाँधकर देश पर न्योछावर होने के लिए तैयार हो जाओ। तुम अपने खून से लक्ष्मण रेखा की तरह लकीर खींच दो, ताकि कोई रावण रूपी शत्रु इस तरफ न आ पाए। यदि भारत माता की तरफ कोई हाथ उठने लगे तो उस हाथ को तोड़ दो। भारत माता, सीता माता के समान पवित्र है। तुम स्वयं को इतना सामर्थ्यवान बना लो कि कोई भी शत्रु इस पवित्र दामन को न छू सके। तुम्हें ही राम और लक्ष्मण की भूमिका निभानी है और देश की बलिवेदी पर कुर्बानी देनी है।

कविता की व्याख्या

1.

कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियो

अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई

फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया

कट गए सर हमारे तो कुछ गम नहीं

सर हिमालय का हमने न झुकने दिया

मरते-मरते रहा बाँकपन साथियो

अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

शब्दार्थ: फ़िदा = न्योछावर, जानो-तन = जान और शरीर, वतन = देश, नब्ज़ = नाड़ी।

व्याख्या: युद्धभूमि में सैनिक अपने प्राण न्योछावर करते हुए अन्य सैनिकों (साथियों) से कहते हैं कि हे साथियो, अब हम अपना शरीर तथा जान देश पर न्योछावर करके मृत्यु की गोद में जा रहे हैं। अब यह देश तुम्हारे हवाले है अर्थात् अब तुम इस देश की रक्षा करो। हमारी साँसें थमती जा रही हैं और नब्ज़ भी कमशोर होती जा रही है। इतना होने के बावजूद भी हमने अपने आगे बढ़ते हुए कदमों को रुकने नहीं दिया। मातृभूमि की रक्षा करते हुए हमारे शीश भी कट गए, परंतु हमें इसका कोई दुख नहीं है। हमें तो खुशी है कि हमने अपनी जान न्योछावर करके हिमालय ;अपने देश की रक्षा की। अपने देश के सिर को नहीं झुकने दिया। मरते दम तक हमारा बाँकपन कायम रहा अर्थात् मरते दम तक हमने हिम्मत नहीं हारी। हे साथियो, अब हम यह देश तुम्हारे हवाले करके मृत्यु की गोद में जा रहे हैं।

काव्य-सौंदर्य:

भाव पक्ष:

1. देश-प्रेम की चरम भावना उजागर की गई है।
2. मातृभूमि की रक्षा हेतु जान न्योछावर करने की प्रेरणा दी गई है।

कला पक्ष:

1. उर्दू शब्दावली का भरपूर प्रयोग किया गया है।
2. भाषा भावाभिव्यक्ति में सक्षम है।
3. 'मरते-मरते' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

2.

जिंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर
जान देने की रुत रोश आती नहीं
हुस्न और इश्क दोनों को रुस्वा करे
वो जवानी जो खूँ में नहाती नहीं
आज धरती बनी है दुल्हन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

शब्दार्थ: रुत = मौसम, टटतु, हुस्न = सौंदर्य, इश्क = प्यार, रुस्वा = बदनाम, खूँ = खून ।

व्याख्या: देश की रक्षा करते हुए सैनिक गर्वित होते हुए कहते हैं कि जिंदा रहने के तो बहुत अवसर प्राप्त होते हैं, परंतु जान देने की ऋतु रोज़ नहीं आती अर्थात् जान देने का अवसर रोज़ नहीं मिलता। जो जवानी खून में सराबोर नहीं होती, वही प्यार और सौंदर्य को बदनाम करती है। आज धरती ही दुल्हन का रूप धारण कर चुकी है। हमें इसकी माँग अपने खून से भरनी है। हे साथियो! अब हम मृत्यु की गोद में जा रहे हैं। यह वतन की रक्षा करने का भार अब तुम्हारे कंधों पर है।

काव्य-सौंदर्य:

भाव पक्ष:

1. देश की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए प्रेरित किया गया है।
2. धरती को दुल्हन की संज्ञा देकर उसकी माँग बलिदान के रक्त से भरने की बात सार्थक बन पड़ी है।

कला पक्ष:

1. उर्दू शब्दावली का प्रचुर प्रयोग किया गया है।
2. भाषा प्रभावोत्पादक है।
- 3.

राह कुर्बानियों की न वीरान हो
तुम सजाते ही रहना नए काफ़िले
फतह का जश्न इस जश्न के बाद है
ज़िदगी मौत से मिल रही है गले
बाँध लो अपने सर से क़फ़न साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

शब्दार्थ: वुफ़र्बानियों = बलिदानों, राह = मार्ग, रास्ता, वीरान = सुनसान, काफ़िले = यात्रियों का समूह, फ़तह = जीत, जश्न = खुशी।

व्याख्या: सैनिक अपने साथियों को संदेश देते हैं कि बलिदानियों का रास्ता कभी सुनसान नहीं होने देना। तुम सदैव नए काफ़िले सजाकर आगे बढ़ते रहना। इस बलिदान के बाद तुम्हें जीवन की खुशी मनाने के अवसर मिलेंगे। इस समय ज़िदगी मृत्यु से गले मिल रही है अर्थात् यह जीवन क्षणभंगुर होने के कारण मृत्यु के समीप है। अब तुम अपने सिर पर क़फ़न बाँधकर मृत्यु को गले लगाने के लिए तैयार हो जाओ। अर्थात् देश की रक्षा के लिए तत्पर हो जाओ।

काव्य-सौंदर्य:

भाव पक्ष:

1. निरंतर कुर्बानियाँ देने के लिए प्रेरित किया गया है।
2. देश-प्रेम की भावना को जनमानस में भरने का सफल प्रयास किया गया है।

कला पक्ष:

1. उर्दू शब्दावली का प्रयोग है।
 2. भाषा प्रभावोत्पादक है।
 - 4.
- खींच दो अपने खूँ से ज़मी पर लकीर

इस तरफ़ आने पाए न रावण कोई
तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे
छू न पाए सीता का दामन कोई
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।

शब्दार्थ: खूँ = खून, रक्त, ज़मी = धरती, पृथ्वी, भूमि, दामन = आँचल, वतन = देश।

व्याख्या: सैनिक अपना बलिदान देने से पहले अपने साथियों से कहता है कि हे साथियो! अपने रक्त से शमीन पर लकीर खींच दो ताकि इस ;हमारीद्ध तरपफ कोई भी रावण रूपी शत्रु अपने पैर न पसारे अर्थात अपने अंदर इतनी शक्ति भर लो कि कोई शत्रु हमारी ओर रुख न करे। यदि कोई शत्रु भारत माता के आँचल को छूने का दुस्साहस करे तो उसका हाथ तोड़ दो अर्थात शत्रु के मनसूबों को कामयाब न होने दो। इस प्रकार का कार्य करो कि कोई सीता के पवित्र आँचल को छू न सके अर्थात भारत माता पर कोई आँच न आ सके। तुम्हीं राम हो और तुम्हीं लक्ष्मण हो अर्थात बुराइयों (शत्राुता) को दूर करने के लिए तुमने यह शरीर धारण किया है, इसलिए अब तुम देश की रक्षा करो। अब यह देश तुम्हारे हवाले है।

काव्य-सौंदर्य:

भाव पक्ष:

1. कवि बलिदान के लिए प्रेरित कर रहे हैं।
2. विभिन्न उदाहरणों के द्वारा सैनिकों को बलिदान के लिए प्रेरित किया गया है।

कला पक्ष:

1. उर्दू शब्दों का प्रयोग किया गया है तथा भाषा प्रभावोत्पादक है।
2. दृष्टांत अलंकार का प्रयोग किया गया है।